[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3688

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

चित्रकला और रंग–परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बद्धता एवं महत्व

डॉ. लक्ष्मी श्रीवास्तव
सहायक प्राध्यापक, चित्रकला, सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या, स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल

कलाओं में चित्रकला सबसे श्रेष्ठ है जो धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष देने वाली है। और घर में परम मंगल होता है जहाँ इसकी प्रतिष्ठा की जाती है। चित्र सूत्र में चित्रकला को समस्त कलाओं में श्रेष्ठ कहा गया है। समस्त कलाएँ हमारे जीवन को सुन्दर और रसमय बनाती हैं। वात्सायायन ने 'कामसूत्र' ग्रन्थ में चौंसठ प्रकार की कलाओं का उल्लेख किया है। ''कामसूत्र के विद्यासमुद्देष्य प्रकरण में काम की उपायभूत 64 कलाओं में ''आलेख्य'' की भी गणना वात्सायायन ने की है, जिनका उल्लेख ''यजुर्वेद'' के (3014–22) मंत्रों में है।'' [1]चित्रकला की गणना समस्त कलाओं में अतिश्रेष्ठ और उद्देश्य पूर्ण रूप से की जाती है हमारा संस्कृत साहित्य अति समृद्ध एवं अतुलनीय है। इसमें कलाओं और चित्रकला पर अनेकों उल्लेख हैं। सभी में चित्रकला के बहुतेरे विवरण हैं। चित्रकला भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने वाली होती है।
भोजदेवकृत समंरागण सूत्रधार में भी कहा गया है :–

चित्रं हि सर्व शिल्पानां मुखलोकस्य च प्रियम।
अर्थात् चित्रकला समस्त षिल्पों में (कलाओं में) प्रधान है तथा सर्वप्रिय है।

ललित कलाओं में चित्रकला का स्थान सर्वोच्च श्रेणी पर है। भित्ति, कागज, ताड़पत्र, वस्त्र, चमड़े इत्यादि फलक पर रेखाओं और रंगों के द्वारा विषयगत अनुभूतियों से चित्र सृजन किया जाता है। रेखांकन, रंग संयोजन, आकार, अनुपात, तूलिकाघात, भावाभिव्यंजना एवं संयोजन के सिद्धान्तों का परिपालन करते हुए चित्र सृजन किया जाना चाहिए।

''चित्रकला का आधार कपड़ा, दीवार, लकड़ी आदि। चित्रपट ; जिस पर चित्रकार अपनी तूलिका से रंग रेखाओं के द्वारा वास्तविक या कल्पित प्राणियों अथवा पदार्थों की आकृतियों का अंकन करता है। चित्र के दो मूल उपकरण होते हैं – रंग और रेखा। रेखा से जिस रूप की सृष्टि होती है, रंग उसे स्थान की स्पष्टता प्रदान करता है।'' [2]चित्रकला और रंगों का परस्पर महत्वपूर्ण सम्बन्ध है। रंग चित्रकला का एक महत्वपूर्ण तत्व है। रंग एक शब्द है जिसे लिखते, सुनते, सोचते या बोलते ही हम उसके अर्थ के साथ एक भाव में चले जाते हैं। जीवन रंगों के बिना, अधूरा है, रंग हमारे जीवन को रसमय बनाते हैं। रंगों का एहसास हमको ईष्वर प्रदत्त प्रकृति की विभिन्न छटाओं और मनुष्य द्वारा सृजित कलाओं के द्वारा होता है। जीवन में कलाओं का और चित्रकला में रंगों का बहुत महत्व है। चित्र की रचना में रूप की सृष्टि रंगों से ही सम्भव है रंगों के अभाव में फलक पर एक बिन्दु भी देख पाना असम्भव है। चित्र सृजन की क्रिया में सारा ज्ञान और अनुभव रंगों के द्वारा ही सम्भव है।प्राचीन शास्त्रों व ग्रन्थों में चित्रकला का उल्लेख मिलता है जिनमें चित्रकला और रंगों को परस्पर पूरक के रूप में ही माना गया है और ग्रन्थों में तो यहाँ तक कहा गया है कि अर्थात् रेखा, कूची, आकृति एवं रंग से अलंकृत चित्रकला में जो व्यक्ति श्रेष्ठ है उसे मनुष्यों में श्रेष्ठ जानना चाहिए। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में उल्लेखित है–

''रेखा च वर्तना चैव भूषणं वर्णमैव च।
विज्ञेया (च) मनुज श्रेष्ठ चित्रकर्मसु भूषणम्''

प्राचीन ग्रन्थों में मूल रंगों, उनको बनाने की विधियों, मिश्रित रंगों, रंग भरने की तकनीकों, रंगों के प्रतीकात्मक प्रयोगों एवं प्रभावों आदि पर गहनतम विचारों, और सिद्धान्तों का उल्लेख मिलता है जिसके ज्ञान एवं अनुषीलन से चित्रकार अपनी उत्कृष्ट चित्रकृतियों की रचना करता है।
विष्णुधर्मोत्तर पुराण में रंग–विधान सम्बन्ध भी पर्याप्त मात्रा में विवरण है इसमें मुख्य रूप से पाँच प्रकार के रंग बताए गए हैं और यह भी उल्लेखित है कि अपनी बुद्धि के अनुसार भाव की कल्पना तथा रंगों का मिश्रण कर सैकड़ों–हजारों प्रकार के रंग बनावें।

''मूलरङ्गाः स्मृताः पञ्च श्वेतः पीतोविलोमतः।
कृष्णो नीलष्च राजेन्द्र शतषोऽन्तरतः स्मृताः

| |40 |16 | |

पूर्व (1वं) रङ्गविभागेन भावकल्पनया तथा
स्वबुद्धया कारयेद्रङ्गं शतषोऽथ सहस्त्रषः

| |40 | |17 | |

''रंगों का सम्बन्ध सूर्य से अधिक है या उसे यूँ समझना चाहिए कि जिस प्रकार सूर्य उर्जाओं का स्त्रोत है उसी प्रकार सभी रंगों का भी एक भाग स्त्रोत वही है, रंग भी उसके यहाँ से उत्पन्न होते हैं। वेदों में सूर्य को सप्तरष्मि या सात अष्वों वाला कहा गया है वे सात और कुछ नहीं, ये सूर्य की किरणों के ही सात रंग हैं। इन्हीं सात रंगों के सम्मिश्रण से ही विष्व के

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

विविध रंगों का निर्माण हुआ है।'' [3]हमारा संस्कृत साहित्य चित्रकला के उल्लेखों से भरा पड़ा है ये साहित्य हमारी अमूल्य निधि है। इन ग्रन्थों में चित्रकला के प्रत्येक आयामों पर विस्तार पूर्वक उल्लेख मिलते हैं। विष्व प्रसिद्ध ग्रन्थ वात्सयायन द्वारा रचित 'कामसूत्र' की टीका यषोधर पंडित ने की जिसमें उसने चित्रकला के छः अंगों पर प्रकाष डाला। इन छः अंगों में रंग भी हैं ––रूपभेदाः प्रमाणानि भाव लावण्य योजनम्

सादृष्यं वर्णिकाभंग इति चित्र षडंगकम~ ।।1।।3।।

हम देखते हैं कि भारतीय ग्रन्थों में समस्त भारतीय चित्रकला का आधार यही षडंग है। षडंग का छठवाँ अंग वर्णिका भंग अर्थात् रंग है। ''मूलतः वर्णिकाभंग में दो शब्द हैं– (1) वर्णिका एवं (2) भंग।

(1) वर्णिकाः– चित्र या चित्र शैली में व्यवहृत विषिष्ट वर्णों; रंगों का समवाय। जिसमें रंग हो वह चित्र है किन्तु रेखा–चित्र भी चित्र है क्योंकि काले सफेद रंगों में ही सब रंग छिपे हुए हैं।

(2) भंगः– भंगिमा, ढंग, रीति।

'वर्णिका' है – Application of colour और

'भंग' है– Fusion of colour." [4]

रंग चित्रकला का प्रधान धर्म एवं गुण है। इसकी साधना के सबसे कठिन है। अवनिन्द्रनाथ टैगोर ने कलाकार के लिए रंगों के अध्ययन–मनन को काफी कठिन माना है इसी प्रकार रायकृष्ण दास भी कहते हैं कि रंगों का सम्पूर्ण ज्ञान उसका उचित प्रयोग, प्रयोग की विधियाँ एवं उसके गुणों का ज्ञान एक चित्रकार के लिए अत्यन्त आवष्यक एवं महत्वपूर्ण है।रंग के बिना चित्र की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। चित्र यदि एक बिन्दु या मात्र एक रेखा ही खींची गई हो वह किसी न किसी रंग की ही होती है और तभी वह देखी जा सकती है। रंग चित्र का एक मूलभूत महत्वपूर्ण तत्व है।रंगों की इसी महत्ता के कारण प्रागैतिहासिक काल से ही मानव ने उसे प्राप्त करने एवं उसके स्थायित्व के सारे प्रयास किए। यही कारण है कि हजारों वर्षों के बाद भी प्रागैतिहासिक चित्रों के रंगों की चमक आज तक बरकरार है। प्राचीनकाल से वर्तमान काल तक मानव ने अपनी कृतियों के अनुकूलन हेतु रंगों के अनेकानेक प्रकार एवं उनके प्रयोग संबंधी तकनीकों का निरन्तर अनुसंधान द्वारा अविष्कार किया, जिसका वैविध्य हमें यूरोपीय कला आंदोलन में स्पष्ट देखने को मिलता है। विषय की एकरूपता होने के बावजूद रंग वैविध्य एवं प्रयोगात्मकता ने नए वादों (isms) को जन्म दिया। समकालीन कला में भी रंगों की तकनीकी प्रयोगधर्मिता जिन नई शैलियों से हमारा परिचय कराती है, वे भविष्य में जब तक मानव चित्र को अपनी सृजनषीलता का माध्यम बनाएगा, तब तक मौलिक अभिव्यक्ति का कारण बनेंगी। इस प्रकार निष्चित रूप से हम यह कह सकते हैं कि चित्रकला के लिए सबसे महत्वपूर्ण अंग के रूप में रंग सृजनषीलता का अनिवार्य और अपरिहार्य अंग है, इसीलिए चित्रकला और रंग की परस्पर अन्योन्याश्रित सम्बद्धता एक सर्वसिद्ध सत्य है।

चित्रकार को एक कलाकृति चित्रित करने के लिए न केवल रंगों का उपयोग आवष्यक होता है बल्कि उसे रंगों के सिद्धान्तों, गुणों उसकी प्रतीकात्मकता रंगों के संयोजन आदि की भी साधना करनी पड़ती है जिसे भारतीय चित्रकला में वर्णित षडंग के अन्तर्गत वर्णिका भंग कहा जाता है। ''नाना वर्णों की सम्मिलित भंगिमा को वर्णिका भंग कहते हैं.... वर्ण ज्ञान के बिना शेष पाँच अंगों की साधना का हमारा सारा प्रयास ही व्यर्थ है; वर्ण ज्ञानं यदा नास्ति किं तस्य जपपूजनः। वर्णिका भंग चित्र के षडंगों में सबसे कठिन साधना होती है। [5]

अन्ततः वस्तु स्थिति स्पष्ट है कि चित्रकला और रंग का चोली–दामन का साथ है। रंग का महत्व बिना आकार के नहीं है और रूप का महत्व बिना रंग के नहीं। जहाँ रंग है वहाँ रूप है और जहाँ रूप है वहाँ रंग है। रंग और चित्रकला की सम्बद्धता अन्योन्याश्रित है और महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची :–

1. *डॉ. भानु अग्रवाल – भारतीय चित्रकला के मूल स्त्रोत, पृ.–13, प्रकाशक–अलगॉरिद्म पब्लिकेशन वाराणसी, संस्करण–1997*
2. *आचार्य रामसुहाग सिंह – कला प्रकाष, पृ.–136, आषा प्रकाषनगृह–नई दिल्ली, संस्करण–प्रथम–1995*
3. *पत्रिका–जीवन संचेतना–जून 2007, लेख–''रंगों की रंगीन दुनिया''–पृ.–39*
4. *डॉ. भानु अग्रवाल – भारतीय चित्रकला के मूल स्त्रोत, पृ.–169*
5. *वाचस्पति गैरोला – भारतीय चित्रकला, पृ.–52–53*
6. *डॉ. शुकदेव श्रोत्रीय – कला बोध एवं सौन्दर्य – छवि प्रकाषन, मुजफ्फरनगर, संस्करण प्रथम 1989*
7. *डॉ. कुमार विमल – कला विवेचन – भारती भवन, पटना, संस्करण 1968*
8. *डॉ. गोपाल मधुकर चतुर्वेदी – भारतीय चित्रकला – साहित्य संगम, इलाहाबाद संस्करण प्रथम 1999*